दृष्टि The Vision

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-**E3**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Ravi Gangwar **Mobile Number:** ____________

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** FP/July-19/451

Center & Date: Mukherjee Nagar, 4/8/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0801337

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION–A

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
   Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.
2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
   Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.
3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
   The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.
4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
   India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

खंड–B / SECTION–B

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
   The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.
2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
   Ideals in politics are required as well as neglected.
3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
   Equals should be treated equally and unequals unequally.
4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
   Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

खंड–A / SECTION–A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.

2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.

3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.

4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

*भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे ।।

"विश्व का एक ही नियम पूर्णतयाः अपरिवर्तनशील है कि कुछ भी हमेशा अपरिवर्तनशील नहीं रहता है।"

भारतीय दर्शन का उपर्युक्त कथन मानव जीवन तथा सभ्यता के लिहाज से सर्वथा उपयुक्त ही सिद्ध हुआ है। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक के इतिहास का अध्ययन करके

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कोई भी परिस्थिति निरन्तर विद्यमान नहीं रहती है फिर चाहे वह अशोक का महान साम्राज्य हो या फिर अंग्रेजों की औपनिवेशिक गुलामी। हर स्थिति का अपना एक अन्त समय होता है, जिसका आना निश्चित होता है और ऐसा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में होता है। कभी-कभी चीजें होने वाले परिवर्तनों से और अधिक विकसित तथा सुदृढ़ हो जाती हैं तो कभी-कभी कुछ बदलाव सभ्यता तक को नष्ट कर देते हैं जैसे- सिंधु सभ्यता आदि।

इसी क्रम में यदि सामाजिक क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में विश्लेषित किया जाये तो भारतीय सामाजिक परम्परा कई हजार साल पुरानी है,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

जिसमें समय के साथ-साथ कुप्रथाओं का समावेश हुआ है तो सांप्रदायिकता, अस्थिरता के चलते बदलाव के प्रति थोड़ी मुखर भी रही है।

आगामी दशकों में सबसे बड़ा बदलाव जो मैं होते देखना चाहूँगा, वह है महिलाओं की सामाजिक स्थिति के प्रति समाज में बदलाव। वस्तुतः आज के समय में सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे कार्यक्रम चलाने पड़ रहे हैं और कभी इस देश में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' का सिद्धान्त दिया गया था। यह हमारे लिये काफी सोचने की बात है कि क्योंकि मातृ शक्ति की सुरक्षा हेतु, सरकार को आगे आना बड़ा और समाज आगे नहीं आया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वास्तव में इस पितृसत्तात्मक सोच में बदलाव जरूरी है जिसमें नारी को केवल भोग वस्तु माना जाता है और जब उनका सामाजिक, राजनैतिक उत्थान होगा तो समावेशी विकास की अवधारणा को भी बल मिलेगा।

इसी प्रकार जातिगत भेदभाव की समाप्ति भी एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है, वस्तुतः आज के समय में भी भारत के कुछ राज्यों में अस्पृश्यता जैसी कुरीति विद्यमान है जिसका मूल आधार जातिगत भेदभाव है। इसी क्रम में समाज में अंतर्जातीय विवाह के प्रति अस्वीकारोक्ति के चलते ऑनर-किलिंग की घटनायें भी बढ़ रहीं हैं, जिनका समाप्त होना अति आवश्यक है।

इसी क्रम में समाज में व्याप्त धार्मिक सांप्रदायिकता के माहौल

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

में कमी का माना भी बहुत जरूरी है जिसके लिए विभिन्न समुदायों के मध्य आपसी विश्वास, भाई-चारा, धार्मिक उदारता का होना बहुत जरूरी है। वस्तुतः आधुनिक युग के समय में सोशल मीडिया जैसे मंचो के जरिये सौहार्द ~~बिगाड़ने~~ बिगाड़ने की कोशिश की जाती रहती है जिस पर नियंत्रण भी जरूरी है।

इसी प्रकार समाज में अगर विरोधी विचारों को जगह नहीं दी जायेगी तो समाज का विकास अवरुद्ध हो जायेगा और मानवीय स्वतंत्रता पूर्ण न होकर केवल दैहिक स्वतन्त्रता ही रह जायेगी। जैसे कि "उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आजादी न हो"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार आज भारत में हो रही मॉब लिचिंग (भीड़ द्वारा न्याय) जैसी घटनाओं के सन्दर्भ में समाज में परिवर्तन की आवश्यकता है। वस्तुतः मॉब लिचिंग की प्रवृत्ति समाज में पशु प्रवृत्ति का संचार करती है जिसमें पूरा समाज अपराधी बन जाता है अतः इस प्रकार की प्रवृत्ति का तत्काल त्याग होना चाहिए।

शायद समान नागरिक संहिता का मुद्दा भी सामाजिक बदलाव के द्वारा सुलझाया जा सकता है जैसे कि जब तक समाज में अन्दर से यह आवाज नहीं आयेगी कि उन्हे अपने देश, समुदाय के विकास तथा समुचित सामाजिक न्याय हेतु एक समान नागरिक संहिता ~~ज्या~~ ज्यादा उचित

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

प्रतीत हो रही है तब तक सरकारें चाह कर भी समान नागरिक संहिता के स्तर पर ज्यादा प्रगति नहीं कर सकती हैं।

इसी क्रम में भारतीय समाज की आधुनिकता सम्बन्धी सोच को भी बदलना है जैसे कि पश्चिमीकरण का मतलब आधुनिकीकरण नहीं है। वस्तुतः यदि हम बिना सोचे समझे पश्चिम की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को अपनाते जायेंगे और अपने परंपरागत सामाजिक मूल्यों को छोड़कर उनके तत्वों को अपनायेंगे तो यह परिवर्तन आधुनिकता की ओर नहीं ले जायेगा। वस्तुतः आधुनिकता का तो मानव समाज, सभ्यता, संस्कृति का परिष्करण है, जिसमें अपने सामाजिक, आर्थिक, नैतिक मूल्यों का त्याग नहीं किया जाता है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अपितु उनका परिष्करण करा जाता है।

अन्य सामाजिक परिवर्तनों में यदि अगर देखा जाये तो भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियाँ जैसे- धार्मिक कर्मकाण्ड, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, स्त्री शिक्षा में कम निवेश आदि मुद्दों पर व्यापक बदलाव की जरूरत है जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय समाज का समावेशी, संधारणीय विकास होगा।

इसी क्रम में अगर व्यापक तौर पर विश्लेषित करें तो केवल सामाजिक स्तर पर नहीं अपितु आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक स्तर भी सुधार के तहत लाये जा सकते हैं जिसमें महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को बढ़ाना, शिक्षा के क्षेत्र में उनके लिए विभिन्न आवासीय,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विद्यालयों की स्थापना, छात्रवृत्ति कार्यक्रम आदि तो आर्थिक क्षेत्र में समान कार्य के लिए समान वेतन, यौन शोषण आदि मुद्दों को संदर्भित करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त सभी परिवर्तनों के लिए मुख्य उपाय जनता में जागरूकता तथा उचित शिक्षा का प्रसार है। वस्तुतः किसी ने ठीक ही कहा है कि

"समाज में प्रचलित शिक्षा प्रणाली उस समाज का दर्पण होती है।"

अर्थात यदि हमें सामाजिक से लेकर किसी भी क्षेत्र में यदि स्थायी बदलाव करने हैं तो उस समाज में प्रचलित शिक्षा प्रणाली को उसी तरीके से बदलना होगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जैसे कि यदि समाज में स्त्री शिक्षा जैसे मूल्यों पर जागरूकता का प्रसार करना है तो सबसे पहले इसके लिए आवश्यक संरचना प्रणाली का निर्माण करना होगा तथा उसके बाद स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन के द्वारा इनकी शिक्षा के क्षेत्र में भागीदारी बढ़ानी होगी ताकि वे आगे शिक्षित होकर स्वयं के साथ होने वाले अन्याय का न केवल विरोध कर सकें अपितु अपने अनुकूल सामाजिक बदलावों की वाहक भी बन सकें।

इसी क्रम में अन्य बिन्दु जैसे जलवायु परिवर्तन, सांप्रदायिक असहिष्णुता, असमान आर्थिक विकास, भ्रष्टाचार आदि से निपटने हेतु भी समाज की मानसिकता में परिवर्तन

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

करना होगा क्योंकि जब तक समाज में बुरे मूल्यों के प्रति अस्वीकार्यता का भाव नहीं आयेगा तब तक इनको पूरी तरीके से रोकना मुश्किल होगा। वस्तुतः यह सच्चीकारिता का मतलब है कि समाज में ऐसे लोगों को बहिष्कार, विरोध, सम्मान की कमी आदि समस्याओं का सामना करना पड़े तभी न केवल व्यक्ति स्वयं सुधरेगा अपितु दूसरों को सुधरने हेतु प्रेरित भी करेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भागामी दशकों में चाहे किसी भी प्रकार का सामाजिक या अन्य तरीके का परिवर्तन हो, इन सबका मूल उद्देश्य मानव का कल्याण ही होगा और समाज में व्याप्त विभिन्न

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

कुरीतियों को दूर करना भी उद्देश्य होगा। वास्तव कोई भी समाज कभी भी परफेक्ट नहीं होता है और आदर्श स्थिति को प्राप्त करना पूर्णतया असम्भव भी नहीं होता है, किन्तु इसका मतलब ये नहीं कि हम प्रयास करना छोड़ दे वास्तविकता में हमारी कोशिश आदर्श के अति निकट पहुँचने की होनी चाहिए और शायद यही मानव समाज, सभ्यता व संस्कृति के लिये पर्याप्त होगा, क्योंकि

"करत-करत अभ्यास से जड़मत होत सुजान
रस्सी आवत जात से सिल पर पड़ति निशान"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खंड–B / SECTION–B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.

2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
Ideals in politics are required as well as neglected.

3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
Equals should be treated equally and unequals unequally.

4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय"

उपर्युक्त पंक्तियाँ शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में कहीं गयी है जिनका अगर व्यापक सन्दर्भ लिया जाये तो यह बात स्पष्ट हो जायेगी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कि केवल पढ़-लिखकर अगर ज्ञान एकत्र कर लिया तो भी वह व्यर्थ है। जब तक आप अन्य मानव मूल्यों जैसे- प्रेम, दया, सत्यनिष्ठा, संयम आदि से परिपूर्ण नहीं है तब तक सब व्यर्थ है। वस्तुतः प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा व्यवस्था में विद्या के सोपान क्रम में सबसे प्रतिष्ठित पद पंडित / ब्राह्मणों का ही था, इसलिए यहाँ यह सन्दर्भ प्रयुक्त किया गया है। इस प्रकार यदि देखें तो यह बात स्पष्ट है कि प्राचीन काल की ये पंक्तियाँ अभी भी काफी हद तक प्रासंगिक मालूम पड़ती है। इसी क्रम में आधुनिक शिक्षा का अगर विश्लेषण किया जाये तो ज्यादातर युवा केवल ज्ञान-

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्राप्ति का प्रयास चल रहा है। वस्तुतः मानव जीवन को सरल व सुविधायुक्त बनाने की होड़ के चलते हुए वैज्ञानिक तकनीकी विकास ने मानव ज्ञान को तो असीमित मात्रा में बढ़ाया है जिसके चलते मनुष्य ने प्रकृति को साध्य न मानकर साधन मानना शुरू कर दिया है। जिस कारण प्रकृति का न केवल अति दोहन हो रहा है अपितु ग्लोबल वार्मिंग, आर्थिक विषमता, मानवजनित आपदाओं आदि में वृद्धि हुयी है।

वस्तुतः ज्ञान तो दोधारी तलवार की भाँति है अगर इसका उपयोग केवल एकपक्षीय होगा तो वह प्रकृति में संधारणीय प्रकृति का नहीं होगा। आधुनिक समय में

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

भारत में प्रचलित यह शिक्षा प्रणाली औपनिवेशिक काल की देन है जिसको लागू करने का उद्देश्य एक पढ़ा-लिखा लिपिक वर्ग तैयार करना था, जो कि अंग्रेजों के काम आ सकता था। स्वतंत्रता के बाद भी यही प्रणाली लागू रहने के चलते भारत में आज शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान परक हो गया है। जिसके चलते भारतीय समाज में प्राचीन काल से व्याप्त सामाजिक मूल्यों की अवधारणा का महत्व कम हुआ है।

वहीं यदि शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया में, इसको केवल ज्ञान प्राप्ति के साधन की बजाय, मानव के सम्पूर्ण विकास का साधन बनाने का प्रयास किया जाये तो यह न केवल मनुष्य अपितु प्रकृति

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

के स्तर पर भी लाभदायक होगा।
वस्तुतः आँइस्टीन ने कहा है कि हमारी विद्यालयी शिक्षा के पूर्ण होने पर जब हम रटा हुआ भूल कर जो याद रख पाते हैं, वही असली शिक्षा है"

अर्थात जब शिक्षा के साथ मानव मूल्यों का भी ज्ञान दिया जायेगा तो व्यक्ति भले ही तथ्यात्मक ज्ञान भूल जाये किन्तु यह ज्ञान जो उसने याद नही किया अपितु सीखा है वह कभी नहीं भूलेगा और अन्तिम रूप से यही शिक्षा कहलाती है।

वस्तुतः मानव मूल्यों युक्त शिक्षा में केवल स्वार्थ की भावना नहीं होगी। व्यक्ति विशेष की भावना लालच, भोग-विलास से युक्त न होकर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

संयम, नियंत्रण, सत्यनिष्ठा से युक्त होगी जिनके प्रभाव से व्यक्ति अपने हित के लिए केवल प्रकृति का अंधाधुंध दोहन नहीं करेगा, बल्कि प्रकृति की जीवन में अहमियत समझकर इसका संरक्षण भी करेगा क्योंकि

"प्रकृति हम से नहीं, हम प्रकृति से सम्बन्धित हैं।"

इसी प्रकार सर्वोच्च शिक्षा वह होगी जिसके जरिये विकसित ज्ञान, विज्ञान की तकनीकों का प्रयोग मानव के सतत. विकास हेतु किया जा सके अर्थात उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग तथा उनका संधारणीय प्रबन्धन। अन्यथा विकास की इस अंधी दौड़ में हम जल्दी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

प्रकृति के विनाश का कारण बनेंगे और ग्लोबल वार्मिंग, आनुवंशिक परिवर्तन जैव विविधता में हानि, कृषि उत्पादकता में कमी जैसी समस्याओं का विकराल रूप देखने को मिलेगा।

गाँधी जी ने कहा था कि "प्रकृति सबकी जरूरतें पूरी कर सकती है, किन्तु लालच किसी एक का भी नहीं"।

अर्थात यदि हमें मानव सभ्यता को इसी तरह विकसित होते हुए देखना है तो प्रकृति से केवल अपनी जरूरतें पूरी करना सीखना होगा और उपभोक्तावादी इस दुनिया में सुधार लाने हेतु शिक्षा व्यवस्था में न केवल प्रकृति संरक्षण के तत्वों को शामिल करना होगा अपितु

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लि
चाहिये।
(Candidate must
write on this mar

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

मानव-प्रकृति सह अस्तित्व की अवधारणा को भी अद्दे से समझना होगा।

वस्तुतः प्राचीनकाल में मनुष्य प्रकृति का सह-अस्तित्व कायम था। बाघ, हाथी, हिरण आदि के संरक्षण हेतु वर्तमान में जिस औपनिवेशिक मॉडल की नीतियों का इस्तेमाल किया जा रहा है, उनमें मानव हस्तेक्षप प्रकृति में प्रतिबंधित है जबकि परंपरागत रूप से आज भी कई जनजातियाँ मानव-पशु सह अस्तित्व के साथ न केवल रह रहीं है अपितु उनका संरक्षण भी कर रहीं है जैसे गुजरात अरूणाचल में रहने वाली जनजातियाँ।

इसी क्रम में आज की शिक्षा के द्वारा केवल साक्षरता में वृद्धि हो रही है अर्थात व्यक्ति

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

सबकुछ जानता है उसे हर क्षेत्र में जानकारी है किन्तु वह शिक्षित नहीं है। शिक्षा के द्वारा मानव के सन्दर्भ साहस, संघर्ष, धैर्य, नैतिकता जैसे गुणों का विकास करने पर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा है जिस कारण मनुष्य अपराध में संलिप्त हो जा रहा है या फिर जीवन की कठिन परिस्थितियों से घबराकर आत्महत्या जैसे कदम उठा लेता है। हमें यह बात समझनी होगी कि जब तक शिक्षा मनुष्य का चतुर्मुखी विकास नहीं करेगी तब तक मनुष्य अपना संपूर्ण विकास करने में सक्षम नहीं हो सकेगा। वस्तुतः

"शिक्षा का कार्य मनुष्य के खालीपन को खुलेपन में बदलना है।"

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लि
चाहिये।
(Candidate must
write on this ma

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अर्थात मात्र ज्ञान प्रदान कर हम व्यक्ति को जीवन के एक पहलू से परिचित कराते हैं जबकि व्यक्ति को जीवन में अनेक समस्याओं से निपटना पड़ता है और ऐसे में शिक्षा का उद्देश्य उसे हर परिस्थिति से निपटने हेतु तैयार करने का होना चाहिए।

इसी प्रकार प्रकृति के साथ सह अस्तित्व संबंधी अवधारणा के द्वारा भी उसे समझ प्रदान करनी चाहिए जैसे कि ~~यथि~~ गतिशीलता (नदी द्वारा), विनम्रता (फल लगे पेड़ द्वारा, शांत तथा धैर्यवान होना/समुद्र की गहराई द्वारा) आदि। मानव द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सबसे प्रमुख अवगुण

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

यही है कि उसमें प्रकृति द्वारा मनुष्य को सीख लेने के बारे में कुछ नहीं बताया जाता है वस्तुतः जब तक व्यक्ति स्वयं को प्रकृति से जुड़ा हुआ महसूस नहीं करेगा तब तक वह न तो प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व कायम कर पायेगा और नही उसके संरक्षण पर ध्यान दे पायेगा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में प्रचलित शिक्षा के ज्ञान रूपी अर्थ को परिवर्तित कर शिक्षा का अर्थ मानव मूल्यों से युक्त, चतुर्मुखी विकासात्मक अवधारणा से युक्त शिक्षा से है जिसका उद्देश्य समावेशी, संधारणीय भौतिक विकास के साथ-साथ,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

साहस , सम्पर्क , नैतिकता , धैर्य जैसे गुणों के विकास द्वारा मनुष्य का आत्मिक विकास हो। और मनुष्य केवल तत्कालीन लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की अपेक्षा प्रकृति संरक्षण द्वारा अपने जीवन की दीर्घकालिक समृद्धि में वृद्धि करे और न केवल इस पीढ़ी अपितु आने वाली पीढ़ियों के भी समुचित विकास का मार्ग तैयार करे। शिक्षा के महत्व के सन्दर्भ में सिकन्दर ने ठीक ही कहा है कि

"मैं अपने जीवन के लिए पिता का आभारी हूँ किन्तु मैं अच्छे जीवन के लिए अपने गुरु का आभारी हूँ"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation